Dr.Sunita Kumari, Guest Asst Prof,
Dept of H.Sc
SNSRKS College, Saharsa

Part-III (H & GEN)

Dt.22/02/2022

सामुदायिक विकास
(Community Development)

Ans:- सामुदायिक विकास का तात्पर्य समुदाय के विकास को पद्धति से है। यह ग्रामीण पुनर्निर्माण के क्षेत्र में अपनाई गई प्रणाली है। सामुदायिक विकास योजना के अन्तर्गत ऐसे कार्यक्रम चलाए जाते हैं जिससे स्थानीय बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा लोगों की प्रमुख समस्याओं का समाधान हो सके। इसका उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी समुदाय को आत्मनिर्भर बनाना है। सामुदायिक विकास का कार्यक्रम वास्तव में जनता का कार्यक्रम है, जो जन सहभागिता पर आधारित है। वास्तव में, गाँव ही देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ होती है। सारे देश का विकास तब ही संभव हो सकता है जब गाँवों में बसने वाली 80% जनसंख्या का विकास हो। यह समाज के सभी वर्गों के लिए है। इससे सामाजिक और आर्थिक विषमता दूर की जा सकती है।

भारत में सामुदायिक विकास का आरम्भ 2 अक्टूबर 1952 को हुआ जो 1953 तक सारे भारत वर्ष पर छा गया।

सामुदायिक विकास का अर्थ:- सामुदायिक विकास दो शब्दों से मिलकर बना है - समुदाय एवं विकास.

समुदाय:- यह कुछ व्यक्तियों का ऐसा समूह है जो किसी एक भौगोलिक स्थान, मोहल्ला, गाँव, ब्लॉक, जिला, राज्य, आदि किसी क्षेत्र में रहते हों तथा इसमें रहने वालों के समूह अपनी कृषि शिक्षा या निर्वाह करने के लिए किसी स्थान पर रहकर एक-दूसरे पर निर्भर हों।

विकास:- विकास शब्द का प्रयोग जब किसी समुदाय के लिए किया जाता है तो इसका अर्थ उस समुदाय की योग्यता और क्षमता बढ़ाना होता है।

अतः सामुदायिक विकास का अर्थ किसी समुदाय के हरेक सदस्य की योग्यता एवं कार्य क्षमता को बढ़ाना है जो किसी विशेष क्षेत्र में रहकर एक दूसरे पर निर्भर हों।

सामुदायिक विकास की परिभाषाएँ
(Definition of community Development)

सामुदायिक विकास के अन्तर्गत होने वाले प्रसार शिक्षा और समाज सेवा कार्यक्रमों के मूल उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह है कि समस्त ग्राम वासियों के सामने एक नया दृष्टिकोण रखा जाए।

डॉ० डी० एन० देवेला के शब्दों में, "सामुदायिक विकास का अर्थ किसी समुदाय के आर्थिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तरों पर विकास कार्यक्रमों एवं योजनाओं से है।"

योजना आयोग के अनुसार, "सामुदायिक विकास वह विधि तथा राष्ट्रीय विस्तार का वह साधन है जिसके द्वारा पंचवर्षीय योजना गाँवों के सामाजिक और आर्थिक जीवन के कार्य को प्रारम्भ करना चाहती है।"

लैंकी के मतानुसार, "सामुदायिक विकास का अर्थ है व्यक्तियों के समूह की शुद्ध योजनाओं तथा गुणों को सामने लाना - जो व्यक्ति एक सामान्य क्षेत्र में निवास करते हैं तथा जो एक-दूसरे के साथ परस्पर निर्भरता का सम्बन्ध रखते हैं।"

श्री देसाई का कथन है, "सामुदायिक विकास योजना एक प्रणाली के रूप में है जिसके द्वारा पंचवर्षीय आयोजन ग्रामों के सामाजिक और आर्थिक जीवन के परिवर्तन के लिए एक प्रक्रिया का निर्माण करते हैं।"

प्रथम पंचवर्षीय योजना के अनुसार, "सामुदायिक विकास तथा राष्ट्रीय विस्तार सेवा कार्यक्रम का केन्द्रीय उद्देश्य गाँव के जीवन के सम्पूर्ण स्तर को वहाँ के निवासियों के शारीरिक श्रम से ही क्रियाशील करके उन्नत करना है।"

श्री मजूमदार लिखते हैं, "ग्रामीण समुदाय के सर्वतोमुखी विकास को उन्नत करने के लिए विशेषतया आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास के लिए है।"

उपरोक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि सामुदायिक विकास का अर्थ बड़ा व्यापक है। तथा ग्रामीण जीवन का पुनर्निर्माण करने वाली विभिन्न योजनाओं का केन्द्र सामुदायिक योजना ही है। इस प्रकार सामुदायिक विकास एक समुदाय के व्यक्तियों में निरन्तर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है। सामुदायिक विकास एक आन्दोलन है जो समूचे समुदाय को एक अच्छा जीवन प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम के उद्देश्य

आनन्द शंकर शर्मा ने सामुदायिक विकास के उद्देश्यों को संक्षिप्त रूप में इस प्रकार बताया है:—

(1) प्रत्येक ग्राम समुदाय को, प्राचीन काल की भाँति, जीवन की मूल आवश्यकताओं को, यथासम्भव समुदाय में ही पूरा करने के लिए, आत्मनिर्भर बनाना।

(2) ग्राम समुदायों को पहले की भाँति स्वशासित इकाइयों में परिणत करना है ताकि वे अपने कल्याण हेतु जीवन-चर्या का प्रबन्ध स्वयं कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति को दृष्टिगत रखते हुए पंचायत, सहकारी सभा, सामुदायिक पाठशाला को पूर्ण रूप से विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है। इन तीन संस्थाओं की सफलता पर ही आगामी स्वशासित समुदायों की आधारशिला बन सकेगी।

(3) ग्राम समुदायों में सामूहिक जीवन की भावना भरना ताकि समुदाय पहले की तरह एक बड़े संयुक्त परिवार की भाँति हो और उत्पादन के साधनों, जैसे भूमि इत्यादि पर निजी स्वामित्व न होकर साझा स्वामित्व हो और समुदाय के प्रत्येक सदस्य के तथा परिवार के कल्याण भरण-पोषण जीविकोपार्जन के लिए उन्हें रोजगार देने के लिए जिम्मेदार हो।

(4) समुदाय तथा व्यक्तियों में 'अपनी मदद आप' आपसी सहयोग तथा सहकारिता के गुण पैदा करना।

(5) समुदाय के अवैज्ञानिक दृष्टिकोण को वैज्ञानिक दृष्टिकोण में परिणत करके मध्यम वर्गीय दृष्टिकोण के साथ सामंजस्य पैदा करना।

(6) वर्तमान नेतृत्व को नेतृत्व ग्राम बनाने तथा कार्यान्वित

करने में सम्मिलित करना और नए नेतृत्व का विकास करना। इस उद्देश्य से युवक मंडल, किसान मंडल, महिला संगठन, मनोरंजन क्लब, इत्यादि संगठनों को आयोजित करना।

(7.) <u>जीवन-स्तर ऊँचा करना</u> - इस उद्देश्य हेतु आय बढ़ाना, आय बढ़ाने के लिए कृषि-उत्पादन बढ़ाना और कृषि-उत्पादन बढ़ाने के लिए नए वैज्ञानिक तरीकों का प्रचार करना तथा ग्रामोद्योग और कुटीर उद्योगों का विकास करना। स्कूल, अस्पताल, यातायात तथा संचार के साधनों जैसे डाकखाने, तारघर, टेलीफोन, स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य केन्द्र, पुस्तकालय, वाचनालय, शौचालय इत्यादि दैनिक जीवन की सुविधाओं को उपलब्ध कराना।

(8) सामुदायिक विकास कार्यक्रम को, भविष्य में भी, स्वावलम्बी बनाने के लिए आवश्यक है कि युवकों को विभिन्न योजनाओं में सम्मिलित किया जाए जिससे वे आगे चलकर सामुदायिक विकास के कार्यक्रमों को संभाल सकें और उसे नेतृत्व प्रदान कर सकें।

(9) बढ़ी हुई आय को उच्च जीवन-स्तर में परिणत करने के लिए आवश्यक है कि स्त्रियों को पौष्टिक भोजन, अच्छे वस्त्र, स्वच्छ तथा आरामदेह घर, स्वास्थ्य जीवन के लिए आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाए।

(10) <u>आधार देने वाले कार्य</u> (Infrastructure works) - इसके अन्तर्गत पुल, सड़कें, इमारतें (पंचायत घर, स्कूल, हेल्थ सेन्टर) आदि के निर्माण आते हैं क्योंकि विकास-कार्य इन्हीं को आधारशिला पर टिके होते हैं।